NOTIFICATION NO: 601/2026

NOTIFICATION DATE: 23-06-2026

NAME OF SCHOLAR: **MEENU KUMARI**

NAME OF SUPERVISOR: **PROF. INDU VIRENDRA**

NAME OF DEPARTMENT: **HINDI**

TOPIC OF RESEARCH: **JAINENDRA AUR AGYEYA KE UPANYASON MEIN STREE-PRASHNA: TULNATMAK ADHYAYAN**

KEYWORD: **स्त्री-अस्मिता, पितृसत्ता, सामाजिक संरचना, नारीवाद, स्वायत्तता**

FINDINGS:

'जैनेंद्र और अज्ञेय के उपन्यासों में स्त्री प्रश्न : तुलनात्मक अध्ययन' विषय के आधार पर यह निष्कर्ष सामने आता है कि दोनों उपन्यासकारों ने स्त्री को परंपरागत सीमाओं से आगे बढ़ाकर एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित किया है। किंतु उनकी दृष्टि और अभिव्यक्ति में स्पष्ट भिन्नता है। जैनेंद्र के यहाँ स्त्री मुख्यतः नैतिक, भावनात्मक और दांपत्य संबंधों के भीतर अपनी अस्मिता की खोज करती है, जबकि अज्ञेय के यहाँ वह अस्तित्वगत स्वतंत्रता, आत्मनिर्णय और वैयक्तिक स्वायत्तता की आकांक्षी है। जैनेंद्र की स्त्री सामाजिक मर्यादाओं से संवाद करते हुए परिवर्तन का मार्ग खोजती है, वहीं अज्ञेय की स्त्री स्थापित मान्यताओं पर प्रश्न उठाकर अपने जीवन-मूल्यों का स्वयं निर्माण करती है। दोनों रचनाकार स्त्री को केवल त्याग, समर्पण और आदर्श के प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि विचारशील, संवेदनशील और निर्णय लेने में सक्षम मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

तथापि उनके स्त्री-पात्रों की स्वतंत्रता पर समय, समाज और सामाजिक संरचना की सीमाएँ भी दृष्टिगोचर होती हैं।

तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जैनेंद्र और अज्ञेय ने हिंदी उपन्यास को स्त्री-विमर्श की नई वैचारिक दिशा प्रदान की। जहाँ स्त्री-प्रश्न केवल सामाजिक न्याय का विषय न रहकर मानवीय गरिमा, आत्मचेतना, समानता और स्वतंत्र अस्तित्व की स्थापना का प्रश्न बन जाता है। यही उनकी रचनात्मक उपलब्धि है। निःसंदेह हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श की दृष्टि से उनका योगदान अमूल्य है।